बी. एड. प्रथम वर्ष
सत्र - 2019 -2020 /2021
विषय - समकालीन भारत एवं शिक्षा
यूनिट - V (b)
व्याख्यान सं. - 19

डॉ. अमोद कुमार सिन्हा
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
AND कॉलेज,
शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

प्रकरण - शान्ति शिक्षा की प्रासंगिकता (र्राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सन्दर्भ)

शांति शिक्षा का अंतरराष्ट्रीय सन्दर्भ

संसार के अनेक महत्वाकांक्षी राष्ट्रों ने अपने नागरिकों में राष्ट्रीयता की भावना को विकसित करने के लिए शिक्षा की व्यवस्था अपने-अपने निजी ढंगों से की है। इन राष्ट्रों में बालकों को आरम्भ से ही इस बात की शिक्षा दी जाती थी कि- **हमारा देश अच्छा अथवा बुरा। अथवा हमारा देश अन्य देशों में श्रेष्टतम है।-** इस प्रकार ही शिक्षा प्राप्त करके बालकों में संकुचित राष्ट्रीयता की भावना विकसित हो गई जिसके परिणामस्वरूप विश्व में दो महायुद्ध हुए और आज भी तीसरे महायुद्ध के बादल आकाश में मंडरा रहे हैं। चूँकि दोनों महायुद्धों के कारण मानव के मानवीय तथा राजनीतिक अधिकारों का हनन ही नहीं हुआ अपितु उसे विभिन्न अत्याचारों को भी सहना पड़ा, इसलिए अब संसार के सभी कर्णाधार इस बात का अनुभव करने लगे है कि संकुचित राष्ट्रीयता की अपेक्षा अंतर्राष्ट्रीय सदभावना का विकास किया जाए जिससे संसार में समस्त नागरिकों में परस्पर दोष, घृणा तथा ईर्ष्या के स्थान पर प्रेम सहानुभूति , उदारता तथा सदभावना विकसित हो जाएँ और संसार में सुख शांति तथा स्वतंत्रता एवं समानता बनी रहे।

अंतर्राष्ट्रीय सदभावना की आवश्यकता

अंतर्राष्ट्रीय सदभावना की आवश्यकता को बिंदुवार इस प्रकार समझा जा सकता है :-

1. **आधुनिक युग में विश्व के सभी राष्ट्र एक-दूसरे के इतने निकट का गये हैं कि एक राष्ट्र में होने वाली घटना अन्य राष्ट्रों को भी प्रभावित किये बिना नहीं रह सकती।** ऐसी स्थिति में यदि विश्व के सभी राष्ट्रों को एक-दूसरे का निरंतर भय बना रहेगा तो प्रत्येक राष्ट्र अपनी रक्षा के लिए अथवा युद्ध की तैयारी के लिए अपनी अधिक से अधिक शक्ति को विनाशकारी शास्त्रों के निर्माण में लगता रहेगा। इससे विज्ञान का दुरुपयोग होता रहेगा, मानव का कल्याण नहीं। अत: अच्छा यही है कि मानव में अंतर्राष्ट्रीय सदभावना का विकास किया जाए जिसके प्रत्येक राष्ट्र अपनी शक्ति का प्रयोग मानव कल्याण के लिए कर सके।

2. **आधुनिक युग में संसार का कोई राष्ट्र आत्मनिर्भर होने का दावा नहीं कर सकता**। दूसरे शब्दों में, संसार के सभी राष्ट्र आज आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से एक दूसरे पर निर्भर है**।** एक राष्ट्र के उधोग धंधे की सफलता दूसरे राष्ट्र में पैदा किये हुए कच्चे माल की खपत पर निर्भर करती है। उदहारण के लिए अमरीका जैसे समृधिशाली राष्ट्र को भी पटसन की खपत के लिए दूसरे राष्ट्रों पर निर्भर रहना पड़ता है। राजनीतिक दृष्टि से भी आज आत्मनिर्भरता युग समाप्त हो चूका है।

3. **संसार के सभी राष्ट्र छोटे अथवा बड़े, उन्नतिशील अथवा पिछड़े हुए सभी इस विश्वव्यापी परिवार के सदस्य है**। जिस प्रकार एक परिवार के छोटे तथा बड़े सभी सदस्य प्रेम के साथ जीवन-यापन करते हैं उसी प्रकार विश्वरुपी परिवार के सभी राष्ट्रों में परस्पर प्रेम तथा मित्रता की भावना विकसित होनी चाहिए, जिसके परिणामस्वरूप संसार में युद्ध की अपेक्षा चारों ओर सुख और शांति का साम्राज्य स्थापित हो जायेगा।

4. **भारत में अंतर्राष्ट्रीय सदभावना का विकसित होना और भी आवश्यक है।** इसका कारण यह है कि दीर्घकालीन संघर्ष के पश्चात हम हाल की में दासता की बेड़ियों से मुक्त हुए हैं। अब हमें अपना भाग्य का निर्माण स्वयं ही करना है। हमें अन्य राष्ट्रों से भी सम्बन्ध स्थापित करने हैं जिसमें हम अंतर्राष्ट्रीय मामलों में सक्रिय रूप से भाग ले सकें। पंडित जवाहरलाल नेहरु ने ठीक ही लिखा है, "पृथकता का अर्थ है – पिछड़े रहना और पतन। संसार बदल गया है और पुरानी रुकावटें समाप्त होती जा रही है। जीवन अधिक से अधिक अंतर्राष्ट्रीय होता जा रहा है। हमें इस भावी अंतर्राष्ट्रीयता में अपना योगदान देना है।"

इस प्रकार हम देखते हैं की अंतररास्ट्रीय स्तर पर भी शांति की परम आवश्यकता है। **शांति शिक्षा के अंतरराष्ट्रीय महत्व** निम्नांकित हैं :-

1. ऐसी शिक्षा मानव/बालक में विश्वबन्दुत्व की भावना विकसित करती है।
2. पर विविधता के लिए सम्मान की भावना उत्पन्न करती है, जो विश्व शांति की स्थापना में सहायक है।
3. बालक को विश्व-नागरिकता के लिए तैयार करती है।
4. बालक को इस बात की शिक्षा देती है की सभी राष्ट्र एक दूसरे पर आश्रित हैं।
5. बालक की अंधी एवं संकीर्ण राष्ट्रीयता को समाप्त करती है।
6. बालकों को उन सभी समस्याओं का अवगत कराती है जो सभी देशों से सामन्य रूप से संबंधित हैं।
7. समस्त राष्ट्रों की उपलब्धि का आदर करना सीखाती है।